श्लोकसं०-19

" य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् ।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ॥"

हिन्दीअनुवाद-

जो पुरुष आत्मा को मारनेवाला अर्थात् मृत्यु के कारण के रूप में जानता है तथा जो आत्मा को मारागया मानता है, वे दोनों पुरुष आत्मा के स्वरूप को नहीं जानते हैं। कारण कि आत्मा न तो मारता है और न ही माराजाता है।

(शाङ्कर भाष्य के आश्रय से)

भावार्थ- जो पुरुष इस आत्मा को मारनेवाला जानता है तथा देह के नष्ट होने पर आत्मा को मारागया सोचता है। ऐसे दोनों प्रकार के पुरुष आत्मा के स्वरूप को नहीं जानते हैं।

आत्मा तथा अनात्मा के स्वरूप का भेदयुक्त ज्ञान न रखनेवाला अज्ञानीपुरुष देह में आत्मा का अध्यास करता है। देह के मरे जाने पर वह सोचता है कि मैं मारा गया अथवा मैं मारनेवाला हूँ।

किन्तु आत्मा में किसा प्रकार का विकार स्पन्दित नहीं होता। यह आत्मा अविक्रिय है। इसीकारण यह आत्मा न तो किसी को मारता है तथा न ही किसी के द्वारा माराजाता है।